International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

पर्यावरण संरक्षण की पारम्परिक अवधारणा - छत्तीसगढ़ की भुंजिया जनजाति के विशेष सन्दर्भ में

सोमप्रभा डहरे[1], डॉ. अनामिका शर्मा[2]

[1]शोधार्थी, इतिहास विभाग, आंजनेय विश्वविद्यालय, रायपुर (छ. ग.)
[2]सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, आंजनेय विश्वविद्यालय, रायपुर (छ. ग.)

सारांश Abstract

"पर्यावरण ही स्थायी अर्थ व्यवस्था है" --- सुंदरलाल बहुगुणा

छत्तीसगढ़ प्रकृति की सुन्दर गोद में बसा, पर्वतों, पहाड़ों, जंगलों से घिरा हुआ अपनी अलग पहचान लिए स्थापित है। भुंजिया जनजाति छत्तीसगढ़ की एक प्रमुख आदिम जनजाति है। भुंजिया जनजाति विशेष पिछड़ी जनजाति है, जो पूर्णतः जंगल और प्रकृति से जुड़ा तथा उसी में रचा बसा है। भुंजिया जनजाति की धार्मिक-मान्यताएं, सामाजिक-परम्पराएं, आजीविका तथा सांस्कृतिक व्यवहार पर्यावरण संरक्षण की पारस्परिक अवधारणा को प्रतिबिंबित करता है। जंगल तथा प्रकृति को अपनी जिंदगी मान चुकी भुंजिया जनजाति पर्यावरण संरक्षण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

मुख्य शब्द - भुंजिया जनजाति, पर्यावरण संरक्षण, पारम्परिक अवधारणा, प्राकृतिक संसाधन, छत्तीसगढ़, ज्ञान का संरक्षण।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य, भुंजिया जनजाति में प्रचलित पर्यावरण-संरक्षण सम्बन्धी पारम्परिक मान्यताओं तथा प्रकृति से जुड़ाव का अध्ययन करना है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भूमि वन तथा प्राकृतिक संसाधनों के प्रति सम्मान और संसाधनों के सीमित उपयोग की परंपरा इस समुदाय की विशेष संस्कृति का प्रमुख अंग है। आधुनिकता के प्रभाव से भुंजिया जनजाति का पारम्परिक ज्ञान धीरे -धीरे लुप्त हो रहा है, अतः इस ज्ञान का संरक्षण एवं प्रलेखन, पर्यावरण संरक्षण तथा सांस्कृतिक विरासत की दृष्टि से आवश्यक है।

अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्त्रोतों पर आधारित है। प्राथमिक तथ्यों का

संकलन छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले के भुंजिया जनजाति बहुल ग्रामों में क्षेत्रीय अध्ययन के माध्यम से किया गया है। साक्षात्कार जैसी विधि का उपयोग किया गया है। द्वितीयक स्त्रोतों के अंतर्गत पुस्तकों, शोधपत्रों, शोध-प्रबंधों, सरकारी प्रतिवेदनों तथा प्रकाशित साहित्य का अध्ययन किया गया है। संकलित तथ्यों का ऐतिहासिक विश्लेषणात्मक पद्धति से अध्ययन कर भुंजिया जनजाति में पर्यावरण संरक्षण की पारम्परिक अवधारणा का विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तावना

छत्तीसगढ़ भारत का एक प्रमुख जनजातीय बहुल राज्य है । छत्तीसगढ़ अपनी समृद्ध प्राकृतिक-सम्पदा, घने वनों, उत्तम जलवायु तथा विविध जनजातीय संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है। भारत में अनुसूचित जनजातियों को संविधान के अनुच्छेद के अंतर्गत अधिसूचित किया जाता है। जनजातियों का जीवन मुख्यतः जल, जंगल, जमीन से जुड़ा हुआ तथा इस पर आधारित है। छत्तीसगढ़ में निवास करने वाली विशेष पिछड़ी जनजाति अबुझमाड़िया, बैगा, बिरहोर, कमार, पहाड़ी कोरवा, भुंजिया, पांडो आदि शामिल है, जिसे केंद्र व राज्य सरकार द्वारा विशेष पिछड़ी जनजाति में शामिल किया गया है। भुंजिया जनजाति अपनी पारम्परिक जीवन शैली में प्रकृति के संरक्षण को विशेष महत्व देती है। वर्तमान समय में बढ़ती पर्यावरणीय संरक्षण सम्बन्धी पारम्परिक अवधारणाओं का अध्ययन भुंजिया जनजाति की पर्यावरण संरक्षण सम्बन्धी पारम्परिक मान्यताओं एवं उनके महत्व का संक्षिप्त अध्ययन शामिल है।

भुंजिया जनजाति का परिचय

भुंजिया जनजाति छत्तीसगढ़ की विशेष पिछड़ी जनजाति में सम्मिलित एक महत्वपूर्ण जनजातीय समुदाय है। भुंजिया जनजाति का प्रमुख संकेन्द्रण गरियाबंद जिले के बिन्द्रानवागढ़ क्षेत्र, महासमुंद एवं ओडिशा के नुआपाड़ा के सीमावर्ती वनों एवं पहाड़ी क्षेत्रों में पाया जाता है। प्राकृतिक परिवेश में निवास करने के कारण भुंजिया जनजाति अपनी सांस्कृतिक विशिष्टता एवं पारम्परिक ज्ञान प्रणाली को सुरक्षित रखने में सफल है। भुंजिया जनजाति का आर्थिक जीवन मुख्यतः कृषि, लघु वनोपज-संग्रह, पशुपालन तथा प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित है। वनोपज जैसे महुआ, तेंदूपत्ता, हर्रा, बहेड़ा, शहद तथा फल और लकड़ियां जीवन निर्वाह के प्रमुख साधन है। जो आर्थिक महत्व के साथ, सामाजिक जीवन में सामुदायिक सहयोग, पारम्परिक विकास, पारिवारिक एकता को दर्शाता है। भुंजिया जनजाति की धार्मिक मान्यताएं प्रकृति केंद्रित है। वन, पर्वत, जल-स्त्रोत, पवित्र वृक्ष तथा ग्राम देवताओं के प्रति गहरी आस्था इनके सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न अंग है। भुंजिया जनजाति सिर्फ धार्मिक परम्पराओं तक सीमित नहीं है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण के व्यावहारिक साधन के रूप में भी कार्य करती है। जंगलों से जुड़ाव तथा प्राकृतिक संसाधन के संरक्षण की भावना को ये जनजाति आत्मसात कर रहे हैं।

भुंजिया जनजाति में पर्यावरण संरक्षण की पारम्परिक अवधारणा

भुंजिया जनजाति की पर्यावरणीय अवधारणा प्रकृति और मानव के बीच संतुलित संबंध पर आधारित है। भुंजिया समुदाय प्रकृति को जीवन का आधार मानता है, तथा पर्यावरण का स्वतः ही संरक्षण करता है। भुंजिया जनजाति के अनुसार प्रकृति, जल, जंगल, जमीन केवल आर्थिक संसाधन नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों की साझा धरोहर है। ये जनजाति प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण तो करते ही हैं, अपितु संसाधनों का सीमित उपयोग भी जानते हैं। भुंजिया जनजाति के अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व हैं, जिसमें प्रकृति को विशेष स्थान तथा महत्व प्रदान करते हैं। इनके धार्मिक आस्था पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देते हैं। वृक्षों की पूजा, नदियों को पवित्र मानना, सूर्य को जल अर्पित करना, पारम्परिक नियमों का पालन करना इनके प्रकृति प्रेम को दर्शाता है। जंगलों के सीमित उपयोग, आवश्यकता के अनुरूप संग्रह, प्रकृति के प्रति आदर तथा संसाधनों की सुरक्षा को दर्शाता है। कृषि कार्यों में स्थानीय जलवायु एवं प्राकृतिक परिस्थितियों के अनुरूप आज भी पारम्परिक कृषि पद्धति का उपयोग जमीन के उर्वरकता तथा प्रेमभाव को स्वीकारता है। भूमि की उर्वरता बनाये रखने तथा जल संरक्षण जैव विविधता संरक्षण के लिए स्थानीय अनुभवों का उपयोग पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्राप्त कर रहे हैं। चिकित्सा में जड़ी-बूटियों का प्रयोग, रसोईघर की पवित्रता, विवाह के आधार, ज्ञान के नए आधार तथा प्राकृतिक संरक्षण में भुंजिया जनजाति की विशिष्ट पहचान है।

वन, जल, भूमि एवं जैव विविधता संरक्षण में भुंजिया जनजाति की भूमिका

भुंजिया जनजाति में वनों को केवल आजीविका का स्त्रोत मात्र नहीं समझा जाता, बल्कि जीवनदायिनी शक्ति और धार्मिक आस्था के रूप में देखा जाता है। वनों से वनोपज जैसे चार, तेन्दु, तेंदूपत्ता, सारे बीज, हर्रा, बहेड़ा, शहद, गोंद, मौसमी फल तथा चिकित्सा के लिए जड़ी-बूटी का संग्रह किया जाता है। ये वनों को बिना क्षति पहुंचाए संग्रहण करते हैं, तथा आवश्यकता के अनुरूप करते हैं, जिससे संसाधनों का दोहन न हो। भुंजिया जनजाति जीवन का संतुलन जानते है, जिससे प्रकृति तथा पर्यावरण में संतुलन स्थापित है। जल संरक्षण की दृष्टि से भुंजिया जनजाति की परम्पराएं उल्लेखनीय है। प्राकृतिक जल-स्त्रोतों को स्वच्छ रखना अपना दायित्व समझते है। वर्षा आधारित कृषि तथा जल का सीमित उपयोग जल संसाधन के संरक्षण में जनजातियों के योगदान को दर्शाती है। भूमि संरक्षण के सन्दर्भ में भुंजिया जनजाति स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल कृषि पद्धतियों का अनुसरण करता है। जैविक खाद, स्थानीय बीज, सब्जी-साग, मिश्रित खेती, खेती में नदियों का प्रयोग, खेतों की जुताई में हल, मिट्टी की गुणवत्ता के लिए फसल को बदल कर बोना, पहाड़ी क्षेत्रों में पारम्परिक सीढ़ीदार खेती करना जैसी पारम्परिक तकनीकों के उपयोग से भुंजिया जनजाति के ज्ञान तथा अनुभव का पता चलता है, जो प्रकृति के संतुलन को संतुलित कर पर्यावरणीय संतुलन को बनाये रखता है।

आधुनिकीकरण का प्रभाव एवं वर्तमान चुनौतियाँ

सड़कों का निर्माण, नगरीकरण, औद्योगीकरण, वनों की कटाई, वन-क्षेत्रों में कमी तथा प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ते दबाव ने भुंजिया जनजाति की पर्यावरणीय व्यवस्था को प्रभावित किया है। जलवायु परिवर्तन, अनियमित वर्षा, गांव-जंगलों से शहरों की ओर पलायन ने कृषि तथा आजीविका को प्रभावित किया है। वनों की कटाई से वनोपज तथा इसके लाभ नहीं मिल पा रहे हैं। जंगलों का शुद्ध संग्रहण के बिना स्वास्थ्य पर संकट है, वनोपज से बाजार व्यवस्था, इससे मिलने वाले लाभ से वंचित है। फसलों की सही पैदावार नहीं होने से मजदूरी करने शहरों में पलायन करने को मजबूर है। सरकार द्वारा विभिन्न विकास योजनाएं संचालित की जा रही है। समूहों में काम करने, लघु उद्योग तथा शिक्षा की ओर प्रयास जारी है, परन्तु इनके क्रियान्वयन में स्थानीय, सांस्कृतिक एवं पारम्परिक ज्ञान को पर्याप्त महत्व दिए जाने की आवश्यकता है। विकास योजनाओं में जनजातियों की सहभागिता सुनिश्चित की जाये तथा उनके पारम्परिक पर्यावरणीय ज्ञान को संरक्षण नीति का भाग बनाया जाये तो सतत विकास के लक्ष्य अधिक प्रभावी होंगे।

निष्कर्ष

जल, जंगल, जमीन तथा वनोपज पर आधारित भुंजिया जनजाति की प्राकृतिक सुरक्षा, वनों से प्रेम-लगाव इन्हें विशिष्ट महत्व देता है। भुंजिया जनजाति की पारम्परिक पर्यावरणीय अवधारणाएं प्रकृति के साथ संतुलन बनाती है, तथा प्रकृति और मानव के बीच अटूट सम्बन्ध स्थापित करती है। वर्तमान पर्यावरणीय संकट के सन्दर्भ में भुंजिया जनजाति के पारम्परिक ज्ञान प्रणाली से सतत विकास, जैव विविधता संरक्षण तथा प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन में योगदान प्राप्त करते हैं। भुंजिया जनजाति का पर्यावरणीय ज्ञान का संरक्षण, प्रलेखन, उचित संवर्धन किया जाये, जिससे भविष्य की पीढ़ियां इनके अमूल्य योगदान ज्ञान तथा प्रकृति प्रेम से लाभान्वित हो सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. भारत सरकार जनजातीय कार्य मंत्रालय (PVGT), नयी दिल्ली, 2012, पृष्ठ क्रमांक 205-227
2. जनजातीय अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (TRTI), रायपुर, 2018
3. Census of India, 2011
4. छत्तीसगढ़ शासन आदिम जाति एवं अनुसूचित जाति विकास विभाग, रायपुर
5. सिंह, के. एस. (संपा), People of India: Chhattisgarh (Anthropological survey of India), नयी दिल्ली, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1994
6. Tribal development in India – S.C. Dube
7. भारत की जनजातियां – एल. पी. विद्यार्थी

8. Velayutham Sarvanan – Environmental history and tribal in modern India, Palgrave Macmillan, 2018
9. Vineeta Menon – Environment and Tribes in India: Resource conflicts and adaptations, Concept Publishing, 2012
10. Nadeem Hasnain – Tribal India, भारतीय जनजातियों के सामाजिक सांस्कृतिक और पर्यावरणीय जीवन को समझने में उपयोगी